

सुभा
०३

मरणं पितृभ्रात्रोश्च संग्राह्य तत्पंचकम् ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वर ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पृथग्यौत्रसुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्न तस्य विचारयेत् ॥

टीका- जो वरकी राशिसे कन्याकी राशि ६वे' होयतो तस्य

व॥ भृगुहो नवधातु मेः
व॥ भृगुहो नवधातु मेः
नवमे वरः ॥ १० उ॥ त्रिके
कं ग्राह्यं पृथग्यौत्र

Page 5 / 20

(66 of 174)



Jyotish Sarva Sangraha
by Sharma, Ramswarup

वषा परिबलयेते ॥ नैः
उभा भृगुदेवता ॥ वरु
न्मी पविमेषता ॥ भिद्य
उदीनबलम् ॥ वरु
भरुमियमि ॥ वरुदेवता

Page 8 / 20

मया नारी उभृगु नारी
वति ॥ वरुदेवता भिद्य
ति ॥ भरुमृदुदितयमि ॥
उतिवहप्रीतिः ॥ ॥ पृष्ठ
मि के पृष्ठ भमतिप्रवामा
मृ मि के पृष्ठ भमतिप्रवामा

Page 9 / 20

अथ वर्ण फलम्

नोत्तमामुद्रहेतुकन्यां ब्राह्मणी च विशेषतः ।
प्रियते होनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥
विप्रवर्णे च या नारी शूद्र वर्णे च यः पतिः ।
ध्रुवं भवेति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥



Jyotish Sarva Sangraha

धुयतेष॥ मेधमृमिउं२
ठवउं दकट्ट॥ पनदगे
मिउगदं एधमृ॥ कुळ
भुकळि एधि मिउकवे
मिउ॥ मिउ॥ मिउ॥ मिउ॥
धसिकः॥॥ नवमउध
पुधुकविणः॥॥ एध
हउलाप॥ धसिकमेध॥

मन्त्रमिष्टुनेभ्यः ककुटा

त्री॥ अष्टकं केभु रिभी

न निदा मे भुत एतद्

निधु धूयते ॥ भक

रमि वने मे धि दुना वध

ठ मे वर ॥ भी न के भ रि

ॐ मः ॥ अष्टु धि मे ध मे व उ वर

०३ ॥ द्विक भा ॥ अ उ मि ध निर

मन्त्रेष्टुं च निमग्नः
यथा॥ मन्त्रमिष्टुं
हेमी विष्टुः॥ ककुट
भुष्टुमिष्टुः॥ ककुट
जविवभुष्टुः॥ धीनिष्टुः
करकुष्टुः॥ निष्टुः
नीमुष्टुः॥ भी
वमधुतनुष्टुः॥ कुष्टुः

मीनयययने ^{मि} पधं मि
मममी ^{पू} ऊ भै ^{श्री} ठ
वः मउमुते मयमउर
मि मममी विमरः ॥

मिषने ककुटे मैव ॥ उर
नवमि कये भुषा ॥ प
मि म निने मकरो मि य ॥ मउ
०८ ठवे विमर दते ॥ मउउ

लसकेमेधु॥ उवापिठ
 यमपुमे॥ उती॥ कम्
 मेल्लेये॥ येगा॥ उमेठ
 पु॥ नवमेधिवरे
 व॥ म॥ नवथापुमेः
 व॥ म॥ नवथापुमेः
 नवमेधः॥ उ॥ उ॥ उ॥
 कं॥ ग॥ हं॥ प॥ उ॥

भायवदभा॥॥॥
 केभा॥ वैरि विरिगमे
 ध॥॥॥
 नउ॥॥॥
 रि॥॥॥
 मयु॥॥॥
 नउ॥॥॥
 दै॥॥॥

०५

^{नये का}
 नकडुवा ॥ उभुभुडुनडा
 उः ॥ यद्विमैत्रीठवेडुभुक
^{विडा}
 उवुः भववापुठैः ॥ उतिउदि
 गमुमसीविण्डः ॥ ककुप
 वुम्लिकभीनविपु ॥ उल
 एनमिंदेकडियसमि
 मेवमभिमवकुभुवैसुः
 कंटाकधमकरभापुल

सु, सुः ॥ बलदेवु उयान
 निपतिं मदीयघ पमुः ॥
 भा ॥ गदभुं न मये उउम
 वि
 वषा परिबलयेउ ॥ नि
 उउम
 उम ममुदे डुहं ॥ वृद्ध
 ली ^{कनु वि} पविमपडा ॥ मिय
 उदीनवल भु ॥ वृद्ध
 मरु मीयमि ॥ बलदेवु

सुम
 ०४

मया न नी उभुठु न नी
वति ॥ कु ^उवेष्टम प्र
ति ॥ मरु भुद दिउयति ॥
उतिवह धीतिः ॥ ॥ पेशु
दि के पल्लु भमति प्रव ॥ भ
मू दि के सु मम भुठ
गं ॥ पर नु मं व कं
क मं ॥ परं म कं गं गल

पञ्चकामिदानीक

कविः ॥ ५ वरुणः ॥

विः मेधु ॥ भृगुगणेशकृ

कपागणेशकृ ॥ सुय

प्रीतिदीयमी ॥ ७ तिन

कृप्रीतिः ॥ भिंदयिन्म

भवे ॥ विपदानं गुरुध

॥ ८ कृष्णलसः सुधः ॥

ठयभूते मगीमयः ॥ ११

सुम

७१

भकारमुपसृमिभसंजुकी
भीनसुखलगाःपुडाः॥
मिषुनउलाणकट्टादि
परःपनःप्रवठगसु॥
भकारमुप्रवठगिमेधर
मिदिपनदपःपुडपु
ठाकेटाभरुः॥कक
भपसुदसिकः॥॥॥॥॥॥

वैमृष्टीतिः॥ कतिउरति॥
 कतिष्टि॥ नतिमभुग
 गति॥ भलभन्नुभुवम
 भुवकेमयठनुनी॥ द
 भुभुतिमभदिष्टि॥ गिर
 ति॥ तिभुउउरः॥ दृष्टि
 विमृष्टापतिउर॥ दृष्टि
 भुउरपयिभुगि॥ भ॥

सुभ
 ०३

भुजीयं लउया कुए : प
शेणी वैषमं भक्तु
मक्ति ॥ उमदा वमस
मपुमं सावि नवमं निदि
क भुतः ॥ दति कं पद्ममं.
सुतः ॥ सुविनं धलमम
मः ॥ रवेलतु दरे सुतुं कु
ए भुत कुतु भुत भा ॥ व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नैऋतं दक्षिणं रुद्रं
 वरुणं मरुतं नमो
 उग्रं देविनामयुतं ॥
 सुहृन्मित्रं नमो
 रामं सकलनिष्ठः ॥
 जलैर्वाप्यमानं
 वपुः प्रदधुः

सि.म.

१५

सुनकडु॥ सुधुधुतेति
 सयते॥ भय्यासुधुधु
 सिडुसमात्रुठामनी
 वडी॥ सुयलेधिसध
 धुय॥ धुतेमुनिगमु
 उ॥ सुमिनीभवपिंठ
 दु॥ गलयेत्रुप्ररपे॥
 पि॥

भयकयैवमानमुवि
कारः कलदाधः॥भ॥
दकयमुविस्तेयं॥पा॥
१३धदभृकं॥भा॥पा॥
जनपतिउरुद्र॥पा॥तेन
पतिउदतिः॥पा॥तेन
पतिः मधुमुद्र

ऐम
१४

भव॥ सुयिभुकेनयेमुं सुं पं
 पादु मिला ककभा॥ रमाने
 दारिका, ज्या॥ रुभा, मुं, कि
 ने॥ गद, मुं, य, भू, उ, ह
 येम यरुधुति ध्रुतः॥ लयभ
 नि कठेय॥ वल्लु, ठ, यति, ध्रुति
 भा॥ उ, व, क, उ, मि, उ, सु, ये॥ सु, उ, १
 दृग, ल, के, उ, मे॥ ल, उ, प, मे, यति

वेदेकमिदं वथाहु कभा।
 एकानलेथगदेसु॥ कतिभा
 भुं^जकपाभा। एदमेधधु
 दाउवृ॥ दगूठिविसुवि
 लोय॥ दमद्विभदर॥
 नः॥ एतद्विधानं नि
 दृष्टु॥ नयं भुंमेण्येदु॥
 उः॥ नकउं सु दमं कन ॥

शुभ
 ३१

उं विदुः जये ॥ इति पाठः
लभा ॥ यद्गते कये सुचे
यद्गुयम् कवे ज्ञा ॥ यतिमे
धम्मा स्तुये ॥ विना सुतं
सुतः सुतः ॥ यदि तमं
पुत्रे दनि ॥ कर्म न विठ
नं सुमी ॥ कर्मि पुत्रनः

मंस॥ संकेतमनैपुनैः

मृत्त॥ भठनामिहमि

उठोभनुचैः॥ उधारा

मिभदिउत्तकनभा॥ छि

कृष्टैरुष्टकयानिष्टो

मुठंरुष्ट

लिम.

३१

करायामिहवैरि